क्या विवाह आवश्यक है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 1

शलोम! आपका स्वागत है — आइए हम मिलकर पवित्र शास्त्र का अध्ययन करें।

परमेश्वर ने मनुष्य को जो स्वतंत्रताएँ दी हैं, उनमें से एक है विवाह करने की स्वतंत्रता। विवाह परमेश्वर द्वारा स्थापित एक पवित्र वाचा है, जो एक पुरुष और एक स्त्री के बीच होती है। इसका उद्देश्य संगति, परस्पर सहायता, तथा संतान की उत्पत्ति और परवरिश है। जो कोई भी परमेश्वर की व्यवस्था के अनुसार विवाह करता है, वह उसके आशीष में चलता है।

मत्ती 19:4–5 (पवित्र बाइबल, हिंदी):
“क्या तुम ने नहीं पढ़ा कि सृष्टिकर्ता ने आरम्भ से उन्हें
नर और नारी करके बनाया, और कहा, ‘इस कारण मनुष्य अपने पिता और माता को छोड़कर अपनी पत्नी के साथ रहेगा, और वे दोनों एक तन होंगे’?”

यह वचन स्पष्ट करता है कि विवाह मानव जीवन के लिए परमेश्वर की मूल योजना का हिस्सा है। विवाह केवल साथ रहने की व्यवस्था नहीं है, बल्कि यह एकता का संबंध है। “एक तन” होना मसीह और उसकी कलीसिया के बीच के गहरे आत्मिक संबंध को भी दर्शाता है (इफिसियों 5:31–32)। इस प्रकार विवाह एक दिव्य संस्था है, जिसे परमेश्वर ने पतन से पहले स्थापित किया।

क्या विवाह आवश्यक है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 2

विवाह हर व्यक्ति के लिए अनिवार्य नहीं है

फिर भी, पवित्र शास्त्र यह सिखाता है कि हर विश्वासी के लिए विवाह आवश्यक नहीं है। कुछ लोगों को परमेश्वर आत्मिक कारणों से अविवाहित रहने के लिए बुलाता है। प्रेरित पौलुस लिखता है:

1 कुरिन्थियों 7:32–34 (पवित्र बाइबल, हिंदी):
“मैं चाहता हूँ कि तुम चिन्ता से रहित रहो। जो अविवाहित है,
वह प्रभु की बातों की चिन्ता करता है कि प्रभु को कैसे
प्रसन्न करे; पर जो विवाहित है, वह संसार की बातों की चिन्ता करता है कि अपनी पत्नी को कैसे प्रसन्न करे, और उसका मन बँटा रहता है। इसी प्रकार अविवाहित स्त्री या कुंवारी प्रभु की बातों की चिन्ता करती है कि देह और आत्मा दोनों से पवित्र रहे; पर विवाहित स्त्री संसार की बातों की चिन्ता करती है कि अपने पति को कैसे प्रसन्न करे।”

यहाँ पौलुस दिखाता है कि अविवाहित जीवन परमेश्वर की सेवा के लिए अविभाजित समर्पण संभव बनाता है। बाइबल के अनुसार यह भी एक अनुग्रह का वरदान है (1 कुरिन्थियों 7:7)। विवाह सम्मान योग्य और आशीषित है, लेकिन उसके साथ जिम्मेदारियाँ भी जुड़ी होती हैं।

क्या विवाह आवश्यक है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 3

विवाह की व्यावहारिक जिम्मेदारियाँ

विवाह सुंदर है, पर इसके साथ उत्तरदायित्व आते हैं। विवाह के बाद:

पति और पत्नी एक-दूसरे के शरीर के प्रति उत्तरदायी होते हैं (1 कुरिन्थियों 7:3–5),
आर्थिक, भावनात्मक और पारिवारिक जिम्मेदारियाँ साझा करनी होती हैं,
सेवकाई, यात्रा, उपवास और लंबी प्रार्थना के लिए व्यक्तिगत स्वतंत्रता सीमित हो जाती है।

इसके विपरीत, अविवाहित जीवन सेवकाई के लिए एक विशेष लचीलापन और स्वतंत्रता देता है। अविवाहित विश्वासी बिना पारिवारिक बंधनों के यात्रा कर सकता है, उपवास कर सकता है और अधिक समय प्रार्थना व प्रचार में लगा सकता है। यह परमेश्वर के राज्य में अनन्त फल ला सकता है।

सेवकाई में अविवाहित जीवन के बाइबिलीय उदाहरण

बाइबल में कई महान सेवक ऐसे हैं जिन्होंने विवाह नहीं किया और अपना जीवन पूरी तरह परमेश्वर की सेवा में अर्पित किया:

यीशु मसीह, जिन्होंने पूरी तरह पिता की इच्छा को पूरा किया और अविवाहित रहे। प्रेरित पौलुस, जो बारह प्रेरितों में से नहीं थे, फिर भी परमेश्वर ने उन्हें

क्या विवाह आवश्यक है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 4

अत्यन्त सामर्थी सेवकाई दी (1 कुरिन्थियों 15:10)।
यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला और भविष्यद्वक्ता एलिय्याह, जिन्होंने संयम और पूर्ण समर्पण का जीवन जिया।

इसलिए अविवाहित रहना कोई कमतर मार्ग नहीं, बल्कि परमेश्वर की इच्छा के अनुसार एक वैध और सम्माननीय बुलाहट है।

संयम के लिए विवाह परमेश्वर की व्यवस्था

पवित्र शास्त्र यह भी सिखाता है कि जिनके लिए संयम कठिन है, उनके लिए विवाह परमेश्वर का दिया हुआ उचित मार्ग है:

1 कुरिन्थियों 7:8–9 (पवित्र बाइबल, हिंदी):
“मैं अविवाहितों और विधवाओं से कहता हूँ कि वे मेरे समान
रहें तो अच्छा है। पर यदि वे संयम न रख सकें, तो विवाह करें; क्योंकि कामवासना में जलने से विवाह करना उत्तम है।”

इस प्रकार विवाह मनुष्य की इच्छाओं को पवित्र और धर्मी सीमा में रखने का परमेश्वर का प्रावधान है। विवाह करना पाप नहीं है; पाप है विवाह के बाहर कामुकता में लिप्त होना (इब्रानियों 13:4)।

क्या विवाह आवश्यक है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 5

विवाह के बिना साथ रहने के विषय में चेतावनी

बाइबल स्पष्ट रूप से सिखाती है कि विवाह के बिना साथ रहना पाप है, चाहे कोई जोड़ा वर्षों से साथ रह रहा हो या उनके बच्चे हों। परमेश्वर पश्चाताप और औपचारिक, वाचा-आधारित विवाह की ओर बुलाता है:

इब्रानियों 13:4 (पवित्र बाइबल, हिंदी):
“विवाह सब में आदर का हो, और विवाह-शय्या निर्मल रहे;
क्योंकि व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियों का न्याय
परमेश्वर करेगा।”

विवाह केवल रस्म या उत्सव नहीं है, बल्कि यह आज्ञाकारिता, वाचा और सार्वजनिक प्रतिबद्धता है — परमेश्वर और लोगों के सामने।

उद्धार सर्वोच्च प्राथमिकता है

जो लोग विवाह की इच्छा रखते हैं, उन्हें यह स्मरण रखना चाहिए कि उद्धार सबसे पहली प्राथमिकता है। कोई भी सांसारिक संबंध मसीह के साथ हमारे अनन्त संबंध का स्थान नहीं ले सकता। मसीह के बिना

क्या विवाह आवश्यक है?

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 6

हम सदा के लिए खोए हुए हैं। और यीशु स्वयं सिखाते हैं कि स्वर्ग में विवाह नहीं होगा:

मत्ती 22:30 (पवित्र बाइबल, हिंदी):
“क्योंकि पुनरुत्थान में न तो वे विवाह करेंगे, और न विवाह
में दिए जाएंगे, पर स्वर्ग में स्वर्गदूतों के समान होंगे।”

अनन्त जीवन का केन्द्र परमेश्वर के साथ संगति है, न कि सांसारिक व्यवस्थाएँ।

निष्कर्ष

विवाह परमेश्वर द्वारा स्थापित एक महान आशीष है, जो उसके लोगों के साथ उसकी वाचा को दर्शाता है। साथ ही, अविवाहित जीवन भी एक मूल्यवान और सम्माननीय बुलाहट है, जो प्रभु के प्रति पूर्ण और अविभाजित समर्पण की अनुमति देता है। दोनों ही मार्ग आत्मिक रूप से महत्वपूर्ण हैं। सबसे आवश्यक बात है — आज्ञाकारिता, विश्वासयोग्यता और जीवन में परमेश्वर को सर्वोच्च स्थान देना।

मारानाथा!

क्या विवाह आवश्यक है ?

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp

NURU YA UPENDO www.wingulamashahidi.org | 7